

ग्रामीण मुर्गी पालन

डॉ. दीपक ठाकुर, डॉ. एस. पी. सिंह, शालिनी टोप्पो, बलदेव अग्रवाल

ग्रामीणों में छोटे पशुओं के अंतर्गत मुर्गी पालन का विशेष महत्व है। मुर्गियां ग्रामीण संस्कृति एवं जीवनशैली का अहम हिस्सा हैं। आमतौर पर प्रत्येक परिवार अपने घर के पिछवाड़े में 5-10 मुर्गियों का पालन करता है। देशी मुर्गी वर्ष में 3 बार अंडे देती हैं। इस प्रकार प्रत्येक बार 10-12 अंडे देने पर वर्ष में इनका औसतन उत्पादन कुल 30-35 अंडे का माना जा सकता है। जिनका 10-15 प्रतिशत हिस्सा अंडे के रूप में खाने एवं 85-90 हिस्सा चुजे उत्पन्न कर उन्हें मांस उत्पादन के लिए पाला जाता है। यह मुर्गी पालन गरीब परिवार के लिए नियमित आय का महत्वपूर्ण स्रोत बन सकता है।

मुर्गी पालन से लाभ

ग्रामीण परिवार बिना लागत एवं कम देखरेख कर अपने घरों की बाड़ी में मुर्गी पालन कर सकते हैं। इन मुर्गियों का प्रमुख आधार घरेलू बचाखुचा खाद्य पदार्थ कीड़े, मकोड़े, एवं जैविक खाद्य अवशेष होता है। इस तरह से देशी मुर्गियां अनुपयोगी अवशेष पदार्थों को उपयोगी अंडे एवं मांस में बदल देती हैं। जिनसे इनका मांस स्वादिष्ट होने के साथ-साथ अधिक मूल्य वाला हो सकता है। मुर्गी पालन ग्रामीणों को परिवारिक पोषण के साथ-साथ अतिरिक्त आय देता है। आकस्मिक आवश्यकता पड़ने पर मुर्गी बेचकर धन उपलब्ध हो सकता है।

आवास प्रबंधन

मुर्गियों के आवासीय व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य है कि उन्हें सुरक्षा प्रदान करना व आराम देना जिससे की उनके अण्डे एवं मांस में कमी न आने पाये। मुर्गियों में शिकारी द्वारा खा लेने वातावरण प्रकोप के कारण होने वाली मृत्यु दर को कम करने एवं सुविधाजनक पालन बनाने हेतु आवास की व्यवस्था पर ध्यान देने योग्य बातें निम्नलिखित हैं-

- * मुर्गियों का आवास अपने आवास के साथ लगा हुआ स्थानीय वस्तुओं जैसे- बांस, लकड़ी, खपरैल से बनाया जाता है।
- * मुर्गी घरों को इकट्ठे हुए पानी बाढ़ आदि से बचाने हेतु फर्श को जमीन से 1 फुट ऊंचा बनाए ताकि बीट आदि नीचे इकट्ठा हो जाएं

जिसे बाद में इस्तेमाल किया जा सके।

- * घर का फर्श नमी रहित आसानी से सफाई किया जाने वाला एवं मजबूत होना चाहिए जिसमें चूहों इत्यादि का प्रकोप न होने पाए।
- * छत को पैरा से बनाया जा सकता है जिससे वर्षा में पानी चुहने की गुंजाइश नहीं रहती।
- * दीवारों का लगभग 75 प्रतिशत हिस्से को बांस की जाली बनाकर ढकें। जालीदार दीवार में मोटा बोरा का पर्दा लगाएँ। आवश्यकतानुसार बारिश या तेज धूप पड़ने पर इसे खोलकर लटका दें ताकि मुर्गियां पानी तथा गर्मी से बची रहें। इन बोरो को अधिक गर्मी के दिनों में पानी डालकर ठण्डा करें।

विभिन्न श्रेणीयों के मुर्गियों में जगह आवश्यकता

श्रेणी	आवश्यकता जगह वर्ग फीट प्रति मुर्गी
छोटे चुजे	0.5
2-6 सप्ताह	0.75
6 सप्ताह से अधिक	1.00
ब्रायलर	1.00
लेयर /बड़े मुर्गी	1.50-2.00

मुर्गी चुजों की देखभाल

चुजों में मृत्यु दर अधिक होती है। इन्हें सुरक्षित स्थान पर रखना अति आवश्यक है। चुजों को प्रथम 3-4 सप्ताह तक पालने में निम्नानुसार सावधानियां बरतनी चाहिए-

- * दुरस्थ जगह से चुजे क्रय करके लाने की वजह से उनमें भुख एवं थकान होती है। सर्वप्रथम उन्हें किसी छांव एवं शांत जगह में रखकर बारीक मक्का या दलिया कागज के बिछोरे पर छिड़ककर देना चाहिए। पानी में गुड़ मिलाकर पिलाना चाहिए।

- * मुर्गीफार्म/हैचरी से चुजे आने से पहले मुर्गी घर को चुजे या घर को चुने या गोबर से लीपना चाहिए।
- * चुजों को हमेशा खुले में नहीं रखना चाहिए।

घर के अहाते में, मुर्गी घर में या रात के समय एवं दोपहर को आंगन में बड़ी टोकरी के नीचे ढंककर रखना चाहिए।

- * मुर्गी घर में टोकरी में दाना पानी की पर्याप्त व्यवस्था रखनी चाहिए।
- * मुर्गी घर में प्रथम दो सप्ताह तक दिन एवं रात दोनों समय बल्ब जलाकर चुजों को ठण्ड से बचाना चाहिए। दो सप्ताह तक केवल रात में बल्ब जलाना ही पर्याप्त है। रात में बल्ब जलाने से रोशनी रहती है जिससे व रात में भी दाना पानी लेते रहते हैं।

आहार प्रबंधन

- * मुर्गी ग्रामीण परिवेश में उपलब्ध जैविक अनुपयोगी पदार्थों को पौष्टिक प्रोटीन अंडा मांस में बदल देती है।
- * मुर्गी का भोजन अच्छे गुण स्वादिष्ट एवं पोषक तत्व वाला होना चाहिए जिससे की अण्डा एवं मांस के गुणों में कमी न आये।
- * पानी आहार का प्रमुख पदार्थ होता है जो दानों को नरम करने एवं पचाने एवं हजम हुए भोजन को खून में ले जाने, शरीर के अंदर से खराब तत्वों को बहार निकालने और शरीर का तापमान बनाये रखने के लिए आवश्यक होता है।
- * मुर्गीयों को वर्षभर पैदा होने वाले अनाजों को मिश्रित करके खिलाना चाहिए। यदि संभव हो तो संपूर्ण आहार के रूप में उन्हें:

पानी -- ताजा पानी, हरा चारा।

कार्बोहाइड्रेट-- पीली मक्का, जौ, जई, ज्वार, चावल का छिलका, कनकी, गेहूँ, गेहूँ की भूसी।

प्रोटीन -- मुंगफली की खली, सोयाबीन चुर्ण, बिनौले का चुर्ण, तिल का चुर्ण, नारियल की खली, सरसों का चुर्ण, अलसी चुर्ण, दाल का छिलका, मछली का चुरा।

खनिज -- हड्डी का चुरा, नमक, संगमरमर का चुरा।

विटामिन -- हरा चारा, पीली मक्का, मछली का चुरा आदि को संतुलित आहार के रूप में प्रयोग किया जाता है।

- * मुर्गीयों को नियमित हरा चारा एवं स्थानीय उपलब्ध आहार प्रदान करने से उनकी बढ़त केवल स्वयं द्वारा चरने से ज्यादा तेजी से हो सकती है।

- * नियमित कृमि नाषक दवा तथा बाह्य परजीवी नाषक का उपयोग करना चाहिए।

मुर्गीयों में प्रमुख बीमारियों से बचाव हेतु टीकाकरण कार्यक्रम

आयु	बीमारी का नाम	विधि	खुराक/मात्रा
5-7 दिन	रानीखेत/झुमरी	आंख/नाक में ओरल	0.5 कि.मी.
14-15 दिन	संक्रामक बुरसल बीमारी	मांस पेशी में	2.0 बूंद
4-5 सप्ताह	फाऊल पॉक्स/चेचक	मांस पेशी में	0.5 मि.ली.
5-7 सप्ताह	रानीखेत/झुमरी	मांस पेशी में	0.5 मि.ली.
14-15 सप्ताह	फाऊल पॉक्स/चेचक	मांस पेशी में	0.5 मि.ली.
16-18 सप्ताह	रानीखेत/झुमरी	मांस पेशी में	0.5 मि.ली.